ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 156-160
www.allresearchjournal.com
Received: 09-02-2023
Accepted: 11-03-2023

चन्द्रेश कुमार
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, आदर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
चन्द्रेश कुमार
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

चन्द्रेश कुमार एवं डॉ. पतंजलि मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की चारों आयामों पर उत्तरदायिता निर्वहन में अंतर की सार्थकता पायी गई। इसके संभावित कारण यह हो सकते है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों का प्रबंधन एवं प्रशासन का स्वरुप भिन्न होता है। इसी कारण संभवतः शिक्षक उत्तरदायिता चाहे वह छात्रों के प्रति हो, विद्यालय के प्रति हो, अभिभावको के प्रति हो या समाज के प्रति, यह अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में अधिक पाई गई। विद्यार्थियों संबंधी उत्तरदायिता वहन करने में अपेक्षाकृत शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में विषय का अद्यतन ज्ञान, सहायक सामग्री का प्रयोग, नवाचारी शिक्षण विधियों का प्रयोग, अनुशासनबद्धता पर ध्यान, विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन, समुदाय से सम्पर्क बनाना, अभिभावकों के साथ मीटिंग निर्धारित समय पर नियमित रुप से करना अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा संभवतः अधिक किए जाते है। शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में संभवतः रुढ़ीवादी प्रवृत्ति पायी जाती है तथा वित्तीय संसाधनों का प्रयोग निर्धारित बजट के अनुसार ही वे कर पाते हैं। अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया है।

कूटशब्द : रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय, शासकीय एवं अशासकीय, शिक्षक, व्यावसायिक सन्तुष्टि।

प्रस्तावना
शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक एक जीवन आदर्श एवं ज्ञानपथ का सतत् एवं अनवरत चलने वाला पथिक तथा ज्ञान धारा का अजस्त्र स्रोत है। एक अच्छा शिक्षक न सिर्फ एक कक्षा एवं स्कूल का वातावरण बदल सकता है, वरन् समाज में सुधार लाने की स्थिति भी निर्मित कर सकता है। वह बालक के जीवन में अज्ञान का नाश करके ज्ञान का उजाला करता है। वह छात्रों में सुबुद्धि की धारा बहाता है जिससे वह सत्–असत् की पहचान कर सके। जिस तरह एक जंग लगे लोहे के टुकड़े को मिस्त्री चमकाकर एक मशीन का पुर्जा बना देता है, उसी प्रकार ज्ञानरहित तथा गुणहीन बालक अध्यापक के हाथ से ज्ञानवान हीरा बनकर चमकने लगता है। अध्यापक का कार्य है– सम्यक ज्ञान, उसका सम्यक मनन, सम्यक प्रवचन तथा प्रयोग। अध्यापन उसका धर्म है, स्वभाव है, प्रसन्नता है, जीवन है।
सामान्यतः शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने विषय में निष्णात हो और शैक्षिक दक्षताओं में कुशल हो। किसी भी राष्ट्र की धरातल की नींव के पत्थर राष्ट्र के गुणी एवं दक्ष शिक्षक होते हैं।

"आचिनोति च शास्त्री आचारें स्थापयत्यसौं।
आचारयति अन्यान्श्चै स आचार्यः इत्युच्यते।"

अर्थात् जो शिक्षक शास्त्रों का स्वाध्याय करें तथा समाज में अन्य व्यक्तियों को, बालकों को अपने आचरण से प्रेरित करें तथा उत्तम संस्कारों की स्थापना करें, वही शिक्षक कहलाने योग्य है।
शिक्षक की छवि निम्नवत अपेक्षाओं के रूप में प्रस्तुत है–

वर्तमान में शिक्षकों की उत्तरदायिता का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। आज शिक्षक अपने परम्परागत कार्य को ही करके अपने उत्तरदायित्व की इतिश्री नहीं मान सकता। अब उसे अनेक कार्यों और कर्त्तव्यों को पूरा करना होता है। शिक्षकों की उत्तरदायिता शिक्षकों के कार्य मूल्यांकन से संबंधित होती है। एक समुन्नत विद्यालय में जिम्मेदार अध्यापक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण आधारस्तम्भ की होती है, इस हेतु आवश्यक है कि अध्यापक सुयोग्य हो और उनमें अपेक्षित अध्यापन क्षमताएं हो।

व्यवसाय से संबंधित वांछित और अवांछित अनुभवों का संतुलन एवं संयोग का परिणाम है। व्यवसाय संतुष्टि का संबंध व्यवसाय के प्रति कर्मचारी की दक्षता से तथा कर्मचारी के व्यक्ति प्रसन्नता से है। इसलिए मनोवैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित लोगों का ध्यान व्यवसाय संतुष्टि प्रत्यय की ओर निरन्तर आकर्षिक होता जा रहा है संतुष्टि किसी भी व्यवसाय का एक आवश्यक पक्ष है। जब तक व्यक्ति अपने व्यवसाय से संतुष्टि नहीं होता तब तक समुचित रूप से अपने कर्तव्य का निर्वाह करना उसके लिए कठिन रहता है।

अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन का आंकलन कर तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

शिक्षक में शिक्षण व्यवसाय के प्रति दायित्वबोध की भावना विकसित करनी है तो उसमें मित्रता एवं मार्गदर्शन से शिक्षण कार्य सम्पन्न करने की क्षमता होनी चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक को मार्गदर्शक की भूमिका में होना चाहिए। शिक्षक की जवाबदेही अपनी संस्था एवं व्यवसाय के प्रति भी होती है। अतः उसे अपने विद्यालय का प्रभावशाली सदस्य होना चाहिए और उसे अपने व्यवसाय का क्रियाशील सदस्य भी होना चाहिए। शोधार्थी ने विभिन्न प्रकार के अभिलेख, शोध–पत्रिकायें एवं पुस्तकों का अध्ययन कर शिक्षक की जवाबदेही का अर्थ ज्ञात किया गया। विभिन्न क्षेत्र में जवाबदेही के सम्प्रत्ययों को ज्ञात किया गया। शिक्षण व्यवसाय में जवाबदेही कम होने के कारण ज्ञात किये गये, व्यावसायिक जवाब देही के कारकों को खोजा गया। अनुदेशनात्मक जिम्मेदारियाँ, शिक्षकों का स्वयं का मूल्यांकन, कक्षा–कक्ष वातावरण, व्यक्तिगत शीलगुण आदि व्यावसायिक जिम्मेदारी के लिए घटक के रुप में खोजे गये।

उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

"उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।"

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यार्थियों के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अभिभावकों के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यालय के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का समाज के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु उद्देष्यों के आधार पर परिकल्पना का निर्माण आवश्यक होता है जिसका अर्थ है – पूर्व चिंतन। शोध विषय के बारे में शोधकर्ता अपने मस्तिष्क में एक ऐसा सिद्धांत निर्मित कर लेता है जिसके बारे में वह कल्पना करता है कि यह सिद्धांत शायद उसके अनुसंधान का आधार सिद्ध हो सकता है। परंतु ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष को वह आधार मानकर नहीं चल सकता है। इसकी प्रामाणिकता अपने अनुभव तथा वास्तविक तथ्यों द्वारा सिद्ध करने की कोषिष करता है। परिकल्पना अनुसंधान हेतु एक आवष्यक कड़ी है जो ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती है। शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

1. "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।"

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, नईगढ़ी, हनुमना, मऊगंज, गंगेव, त्योंथर, जवां एवं सिरमौर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित किए गए है।

समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के सन्दर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के प्रत्येक विकासखण्ड से 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय परिवेश के कुल 72 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर लिया गया है। तत्पश्चात् चयनित विद्यालयों के प्राचार्यो से सम्पर्क कर उपकरण प्रशासन की स्वीकृति प्राप्त कर तथा स्वीकारोक्ति के उपरांत निर्धारित तिथियों पर उपकरण प्रशासित किए गए है। प्रत्येक विद्यालय से 06 शिक्षक (02 विज्ञान, 02 कला एवं 02 वाणिज्य अर्थात प्रत्येक संकाय से एक महिला शिक्षक एवं 01 पुरुष शिक्षक) कुल 432 शिक्षकों का चयन न्यादर्श हेतु लिया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप में उपयोगी होगा।

अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण

डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित शिक्षकों के व्यवसाय सन्तुष्टि मापनीय का प्रयोग किया गया है। यह मापनी मानकीकृत है। इसमें कुल मिलाकर 52 कथन है। मापनी के मानकीकरण की दिशा में उसकी वैधता और विश्वसनीयता का परीक्षण किया गया। मापनी की स्वाभाविक वैधता बहुत ही संतोशजनक प्रतीत हुई। जैसा कि डॉ. मीरा दीक्षित का कथन है कि उन्होंने इस परीक्षण के अंग्रेजी और हिन्दी दानों रूपान्तरों की विश्वसनीयता निकाली। अंग्रेजी रूपान्तर की विश्वसनीयता 0.92 तथा हिन्दी की विश्वसनीयता 0.93 पायी गयी।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके अभाव में शोधकर्ता दिशाहीन होता है। संबंधित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक अनुसंधान क्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान तथा मौलिक व्यवहारिक क्रियात्मक या वैज्ञानिक अनुसंधान आदि के लिए संबंधित साहित्य के अध्ययन के अभाव में कार्य करना संभव नही हैं। संबंधित साहित्य का अध्ययन किसी भी शोधकर्ता को इस योग्य बना देता है कि वह पहले से हुए अनुसंधान कार्य तथा पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं के आधार पर अपनी शोध प्रक्रिया की विधियों, उपकरणों आदि का चयन कर सकें एवं समस्या को गहनता पूर्वक समझकर अपने अनुसंधान को सही दिशा प्रदान कर सकें। इनमें से मुख्य रूप से अनुराधा के. व कलाप्रिया सी. (2015)[1], केवर, आर.एन. (2005)[2], बसु, एस. (2011)[3], मुछाल, महेश कुमार एवं चन्द, सतीश (2016)[4], पाठक, पी.डी (2007)[5], भारती (2005)[6], सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंह (2019)[7] एवं शुक्ल, प्रमोद एवं जय सिंह (2019)[8] व सिंह, ममता एवं डॉ. पतंजलि मिश्र (2021)[9] ने शोध विधि एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित कार्य किये है।

रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

वैज्ञानिक विश्लेषण एवं विवेचन अध्ययन के तथ्यों, परिणामों तथा वैज्ञानिक ज्ञान के संबंधों की खोंज करता है, इसलिए वेस्ट ने इस अध्याय को शोध अध्ययन का हृदय नाम दिया है। किसी भी शोध कार्य को करते समय उद्देश्यों को दृष्टिगत रखकर विभिन्न उपकरणों की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है। तथ्यों को सुव्यवस्थित रूप प्रदान हेतु वर्गीकृत एवं सारणीबद्व करने की जरूरत होती है। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।"

तालिका 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का सांख्यिकीय विश्लेषण

उत्तरदायिता आयाम	लिंग	शिक्षक संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता	
विद्यार्थियों के प्रति	शासकीय	216	32.42	7.14	6.49	0.05	सार्थक अन्तर है
	अशासकीय	216	37.36	8.62		0.01	
अभिभावकों के प्रति	शासकीय	216	34.14	8.36	4.87	0.05	सार्थक अन्तर है
	अशासकीय	216	38.22	9.05		0.01	
विद्यालय के प्रति	शासकीय	216	57.15	12.14	4.84	0.05	सार्थक अन्तर है
	अशासकीय	216	62.56	11.05		0.01	
समाज के प्रति	शासकीय	216	24.14	6.38	5.30	0.05	सार्थक अन्तर है
	अशासकीय	216	27.68	7.46		0.01	

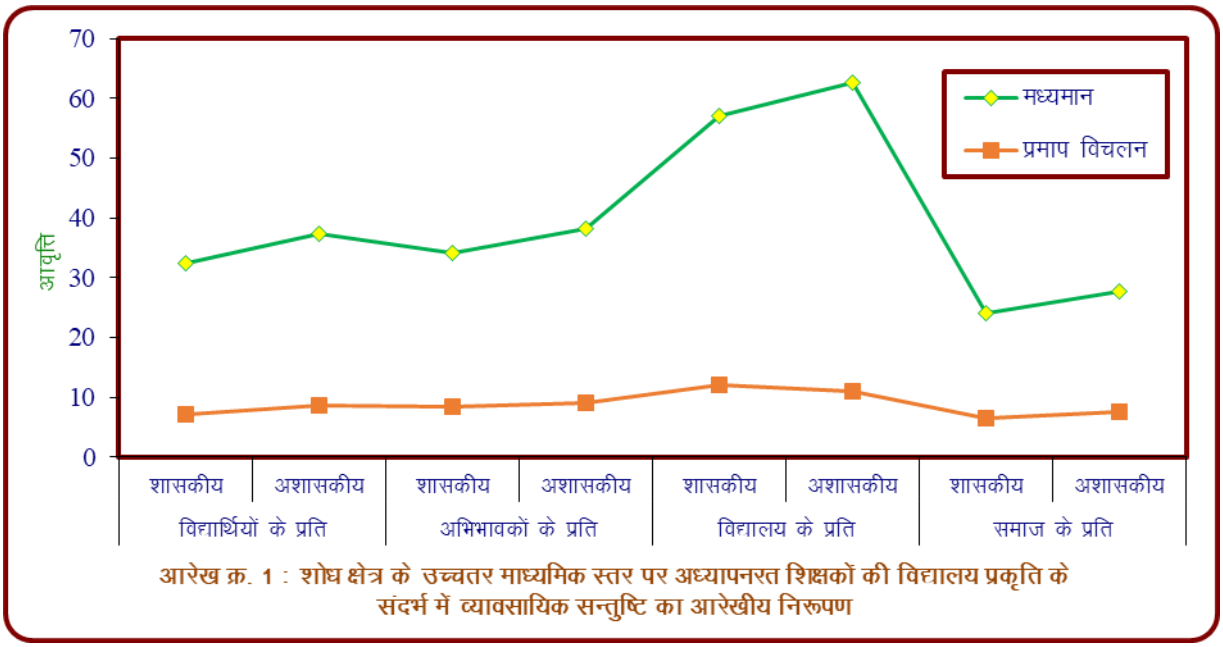

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि विद्यार्थियों के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 32.42 है तथा मानक विचलन 7.14 है, अभिभावकों के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 34.14 तथा मानक विचलन 8. 36, विद्यालय के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.15 तथा मानक विचलन 12.14, समाज के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 24.14 तथा मानक विचलन 6.38 है।

इसी प्रकार अषासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि विद्यार्थियों के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 37.36 है तथा मानक विचलन 8.62 है, अभिभावकों के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 38.22 तथा मानक विचलन 9.05, विद्यालय के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.56 तथा मानक विचलन 11.05, समाज के प्रति सार्थकता का औसत उपलब्धि 27.68 तथा मानक विचलन 7.46 है।

व्याख्या

430 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.33 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.64 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान विद्यार्थियों के प्रति 6.49, अभिभावकों के प्रति 4.87, विद्यालयों के प्रति 4.84 व समाज के प्रति 5.30 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। यह तथ्य स्पष्ट करते है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की चारों आयामों पर उत्तरदायिता निर्वहन में अंतर की सार्थकता पायी गई। इसके संभावित कारण यह हो सकते है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों का प्रबंधन एवं प्रशासन का स्वरुप भिन्न होता है। इसी कारण संभवतः शिक्षक उत्तरदायिता चाहे वह छात्रों के प्रति हो, विद्यालय के प्रति हो, अभिभावको के प्रति हो या समाज के प्रति, यह अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में अधिक पाई गई।

विद्यार्थियों संबंधी उत्तरदायिता वहन करने में अपेक्षाकृत शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में विषय का अद्यतन ज्ञान, सहायक सामग्री का प्रयोग, नवाचारी शिक्षण विधियों का प्रयोग, अनुशासनबद्धता पर ध्यान, विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन, समुदाय से सम्पर्क बनाना, अभिभावकों के साथ मीटिंग निर्धारित समय पर नियमित रुप से करना अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा संभवतः अधिक किए जाते है। शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों में संभवतः रुढ़ीवादी प्रवृत्ति पायी जाती है तथा वित्तीय संसाधनों का प्रयोग निर्धारित बजट के अनुसार ही वे कर पाते हैं। अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की विद्यालय प्रकृति के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया है।

निष्कर्ष

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यार्थियों के प्रति सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अभिभावकों के प्रति सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यालय के प्रति सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का समाज के प्रति सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सन्दर्भ

1. अनुराधा के. व कलाप्रिया सी. जॉब सेटिसफेक्सन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स, एजूट्रेक्स, 2015 अप्रैल;14(8):36–39.
2. केवर, आर.एन. शिक्षक शिक्षिकाओं के जीवन एवं व्यवसायिक सन्तुष्टि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन, प्राइमरी शिक्षक एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली, 2005 दिसम्बर;30(9):58–61.
3. बसु, एस. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन, भारतीय

शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–30, अंक–1 जनवरी–जून 2011 पृ– 34–40.
4. मुछाल, महेश कुमार एवं चन्द, सतीशः बी0पी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, Asian J. Edu. Res. & Tech. 2016;6(1):127-132.
5. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; c2007.
6. भारतीः माध्यमिक स्तर पर सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, सी. सी.एस. विश्वविद्यालय मेरठ।; c2005.
7. सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंहः "रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Education and Research. 2019 Mar;4(2):74-76.
8. शुक्ल, प्रमोद एवं जय सिंह (2019) : "रीवा जिल में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Education and Research. 2019 Mar4(2):58-60.
9. सिंह, ममता एवं डॉ. पतंजलि मिश्र. रीवा जिले में माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(9):149-152.